

## ॥ श्रीपांत्रीश बोलनो थोकनो प्रारंत्रः ॥

१ पहें बोले नरकगित, तिर्यंचगित,मनुष्यगित अने देवतानीगित ए चार गित जालवी ॥

र बीजे बोले एकेंडिय जाति, बेइडिय जाति, बेंडिय जाति, चौरिडिय जाति छोते पंचेंडिय जाति ए पाच जाति जाणवी ॥

३ त्रीजे बोझे ए-बीकाय, व्यवकाय,तेनकाय,वायु काय,वनस्पतिकाय व्यने त्रसकाय ए तकाय जालवी॥

ধ चोथे बोले श्रोत्रेडिय, चक्करिडिय, घार्षेडिय, रसेडिय, श्रने स्वर्शेडिय ए पाच इंडिय जाण्ती ॥

प पांचने बोते आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इंडिय पर्याप्ति, आसोब्धास पर्याप्ति, ज्ञापा पर्याप्ति अने मनः पर्याप्ति ए व पर्याप्ति जाणवी ॥

६ ठठे वोले पांच इंडिय तथा मनवल, वचनवल अने कायबल ए त्रण वल एवं श्राठ अने नवमो श्वा सोहृ।स तथा दशमुं आयु ए दश प्राण जाणवा ॥ आहारक शरीर, तेजस शरीर अने कार्भण शरीर ए पाच डारीर जाणवा त

u ञाठमे बोले सत्यमनोयोग, ग्रसत्य मनोयोग, मिश्र मनोयोग, अने व्यवहार मनोयोग ए मनना चार योग तथा सत्य वचनयोग, श्रसत्य वचनयोग,

मिश्र बचनयोग छने व्यवहार वचनयोग ए चार

वचनना योग तथा खोदारिक काययोग, खोदारिक मिश्र काययोग, वैक्रिय काययोग वैक्रियमिश्र काय योग, खाहारक काययोग, खाहारक मिश्र काययोग छने कार्मण काययोग ए सात कायाना योग एव स र्वमली पन्नर योग जाणवा ॥

ए नवमे बोखे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, श्रवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान स्थने केवलज्ञान एव पाचज्ञान तथा मतिखड़ान,श्रुतखड़ान छने विजंगड़ान एव त्रण ख ङ्कान तथा चक्तदर्शन, श्रमकुदर्शन, श्रवधिदर्शन श्रने

कैंवलदर्शन एवं चार दर्शन मेली बार छपयोग ॥ १० ब्हामे चोले ज्ञानावरणीय कर्म, दर्शनावर णीय कर्म, वेदनीय कर्म, मोहनीय कर्म, आयुकर्म, नामकर्म, गोत्रकर्म अने अतराय कर्म प आठ कर्म॥ ११ अगीआरमे वोले मिध्यात ग्रणगणु आर्श्वा दन ग्रणगणु मिश्र ग्रणगणु, अवश्वित्तन्यक्दृष्टि ग्र जगणु, दश्चिरित ग्रणगणु ममत्त ग्रणगणु, अप्रम न ग्रणगणु निवृतिवादर ग्रणगणु, अनिवृत्तिवादर ग्रणगणु, सृद्दमसंपराय ग्रणगणु, उपशातमोह ग्रणगणु, गणु, सीणमोह ग्रणगणु, सयोगीकेवली ग्रणगणु, अने अयोगीकेवली ग्रणगणु एव चोद गुणगणा ॥

अने अयोगीकेवां गुणगणु एव चोद गुणगणा ॥
११ वारमे वोले जीव शब्द, अजीव शब्द अने
मिश्रक्षद ए त्रण विषय श्रोत्रें जियना ने तथा कालो,
नीलो, पीलो, रातो अने धोलो ए पाच विषय चक्कुरिं
जियना ने तथा सुरिनगध अने छुर्जिगध ए वे विषय
प्राणें जियना ने तथा कमनो, कपायलो, लाटो, मीनो
अने तीलो ए पाच विषय रसे जियना ने तथा सुवालो, खरलरो, ह्यावो, नारे, शीत, जण्ण, लूलो अने
चोषमयो ए आन विषय स्पर्शें जियना ने एवं सर्व मली
पाचे इंजियना त्रेवीश विषय जाणवा ॥
१३ तेरमे वोले जीवने अजीव करी आले ने

रेर देरमे वोळे जीवने अजीव करी आणे ते मिथ्यात्व, अजीवने जीव करी जाणे ते मिथ्यात्व, धर्मने अधर्म करी जाणे ते मिथ्यात्व, अधर्मने धर्म करी जाणे ते मिथ्यात्व, साधुने असाधु करी सदहे ते निध्यात, श्रसाधुने साधु करी सहदे ते निध्यान्त्र सवरताव सेवन रूप मोक्तमार्ग तेने जन्मार्ग करी सहदे ते निध्यात्व, विपयादि सेवनरूप जन्मार्ग ते मोक्तमार्ग करी सहदे ते निध्यात्व, वायरो । रूपी पदार्थने श्ररूपी करी सहदे ते निध्यात्व, मोका दिक श्ररूपी पदार्थने रूपी करी सहदे ते निध्यात्व ए दश प्रकारना निध्यात्व जाणवा ॥

२४ चोदमे बोले नव तस्वना जाणपणा विषे एकझोने पक्षर बोल धारवा ते कहे वे ॥प्रथम जीव तस्वना चोद बोल कहेवे एक स्ह्म एकेडिय, बीजा बादर एकेंडिय, बीजा बेडिय, चोचा ब्रेंडिय, पाचमा चन्नरिडिय, निज्ञ स्वसित्र पर्चेडिय, स्रोते सातमा सिन्न पर्चेडिय, ए सात जातिना जीव वे तेने एक पर्यासा स्रम बीजा स्रपर्यासा एम बे वे केंद्र

अने सातमा चित्र पर्चे दिय, ए सात जातिना जीव वे तेने सातमा सिन्न पर्चे दिय, ए सात जातिना जीव वे तेने एक पर्यासा अने बीजा अपर्यासा एम बे वे नेदें करता चोंद जेद जीवना थाय वे ॥ ॥वीजा अजीवतत्वना चोंट बोल कहें वे धर्मा दित कायनो संप,देशअने प्रदेश ए त्रण जेद तथा आक कायनो सप, देश अने प्रदेश ए त्रण जेद तथा आक शास्तिकायनो सप,देश अने प्रदेश ए त्रण जेद स्था कालड्ज्यनो एकज जेद एव दश जेद अरूपीअजीवन ( ५ ) वया तेनी साथे पुजञ्जना खंब, देश, प्रदेश व्यने परमार्खें ए चार जेदरुपी हे ते मेलवता चीद जेद थाय है ॥

॥ पुर्व नव प्रकारें वंधायते ते नव जेद सिल्पें तेवे श्रज्ञपुषे, पाणपुषे, तेणपुषे, तेणपुषे, वत्रपुषे, मनपुषे, वयपुषे, कायपुषे श्रने नमस्कार पुषे एवनव॥

॥ पाप श्रहार प्रकारे वंधाय हे ते ललीये हैंये-प्राणातिपात, मृपावाद, श्रदत्तादान, भेशुन, परिप्रह, क्रोथ, मान, माया, लोज, राग, हेर, कलह, श्रप्या

न्द्यानः पेंजून्य, रति व्यरति, परपरिवाद, माया मृता वाद, गिथ्यात्वश्रह्य एवं श्रद्धार जेह थया।। ॥ श्राश्रव वीश प्रकारे कद्दे वे १ मिथ्यात्वाश्रव, ए

श्रवताश्रव, ३ प्रमादाश्रव, ४ केपायाश्रव ए योगाश्र व, ६ हिसा करनी ने प्राणातिपाताश्रव, ७ मृपावादा श्रव, ७ चोरी करनी ते श्रदत्तादानाश्रव, ए कुड़ीला श्रव, १० परियह राखवु ते परियहाश्रव, श्रोतेंडि यने मोकली राखे ते श्रोतेंडियाश्रव, १० चर्कांडि

अने, १० पार्यक् राखेषु ते पार्यक्षित्र, आत्राह्म यने मोकवी राखे ते चक्किंरिड्याश्रव, १३ घार्षेड्यि यने मोकवी राखे ते चक्किंरिड्याश्रव, १४ रसेड्यि-यने मोकवी राखे ते रसेड्याश्रव, १४ स्वकेंड्यिये मोकवी राखे ते स्केंड्याश्रव, १५ स्वकेंड्यिये मोकवी राखे ते स्केंड्याश्रव, तेमज मनादिक वि सिर्वनकरे ते कुसंगाश्रव एव वीश जेद थया ॥ ॥ संवर्ता वीश जेद कहेते १ समकीत सवर, व वतपद्मकाण सवर, ३ अपमाद संवर, ४ अकपाय संवर, ५ खयोग संवर, ६ प्राणातिपात सवर, ९ मृ पावाद न बोले ते सबर, ए खदत्त न खीये ते सबर. ए मैथन न सेवे ते सवर, १० परियह न राखे ते सवर. ११ ओन्नेंडियने वश करे ते सवर, ११ चक्कीरेंडियने वड़ा करे ते सबर, १३ घाणें डियने वहा करे ते सबर. १५ स्पर्शे जियने वश करे ते सवर, १६ मन वश करे तेमन सबर, १७ वचन वश करे ते वचन संवर, १० काय वहा करे ते काय सवर, रए झकोपकरणनी ख जयणा न करे ते सबर, २० सुचि कुसंग न सेवे ते

॥ निर्क्तराना वार जेद कहे ठे, १ श्रमशन तद, २ ऊषोदरी तप, ३ वृत्तिसहेप तप, ४ रसस्याग तप, ए कायक्वेश तप, ६ सखीनता तप, ५ प्राथक्षित

संबर ॥

एने मोकला राखे ते १६ मनाश्रव, १९ वर्चनाश्रव, अने १० कार्याश्रव, १ए जमोपकरएखेवा मुकवानी अजयंगा करे ते जमोपकरणाश्रव, १० सचिक्रसंग ( ७ ) तप, ७ विनय तप, ७ व्यावृत तप, १० सङ्काय तप,

११ ध्यान तप, ११ कायोत्सर्गे तप, एव बार ॥ ॥ बंध तत्त्वना चार जेद कहे ठे प्रकृत्ति बंध, हिय ति बंध, ख्रनुजाग वध अने प्रदेश वंध एव चार यथा॥

॥ मोक तस्वना चार नेद् कहें हे एक ज्ञान, वीजो दर्शन, त्रीजो चारित्र छने चायो तप ए नव तस्वना जाणपणा ब्राथ्रयी एकसोने पत्रर चोल कछा॥

जाणपणा ब्राश्रयी एकसोने पत्तर वोल कहा। ॥
१५ पत्तरमे वोले इन्यारमा, कपायारमा, योगातमा,
जपयोगारमा, ज्ञानातमा, दर्शनारमा, चारित्रातमा ब्यनें
वीर्यारमा ए ब्याज प्रकारमा ब्यातमा कहा है ॥
१६ शोलम वोले १ ब्यसुरकुमार, १ नागकुमार,

३ सुवर्णकुमार, ४ विद्युक्तार, ५ अप्तिक्वमार, ६ वीवकुमार, ७ दिशाकुमार, ७ उदिषकुमार, ७ स्त नितकुमार, १० वाद्यकुमार ए दश जुवनपतिना दश दक्क तथा सात नारकीनो एक दक्क तथा एथ्यो काय, अपकाय, तेवकाय, वावकाय अने वतस्रति

काय, व्यवकाय, तेन्नकाय, वान्नकाय व्यते वनस्ति काय ए पाच यावरना पान दमक तथा वेद्यि, तेद्वि य व्यते चन्नेदेद्विय ए त्रण विक्वेद्वियना त्रस दमक एवं नेगणीश थपा व्यते वीकामुं तिर्थेच पर्चेद्वियनुं, एकवीशमु मनुष्यनुं, वावीशमुं न्यत्रिक देवोनु, त्रे वीहामु ज्योतिषी देवोतुं अने चोवीदामुं वैमानिक देवोनु एवं चोवोश दमक जाणवा ॥ १४ सत्तरमें बोले कृष्ण लेखा नील लेखा का पात लेखा, तेजालेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्क लेख्या ष्ठ क्षेत्रया जाणवी॥ १० छडारमे बोजे मिष्वादृष्टि, समिन्या एट खे मिश्रहरी अने समकीतहरि ए त्रण हरि जाणारी रए राणीशमे बोजे कार्त्तप्यान, रौड्यान, धर्म ध्यान अने शुक्कभ्यान ए चार भ्यान जाणवा ॥ २० वोशमें बोले धर्मास्तिकायादि व ऊदय वे तेरे त्रीश बोजे जनमीये ते कहे वे निहा प्रयम धर्मास्ति काय डब्य ते डब्ययकी एक डब्य. केन्न थकी चीररा ज लोक प्रमाण, माज यहां श्रादि श्रंत रहित. जाव थकी श्ररूपी, गुण्यकी जीवपुत्रजने चालवान सहाय आपनार, ए पाच बोले धर्मास्तिकायने जेलखीये॥

॥ अधर्मास्तिकाय पण जन्ययकी एक जन्य हे त्रयमी चोरराज सोक प्रमाण, कासयकी अनादि अनत, जावयकी ब्रह्मी अने ग्रुणयमी स्थिर रहेना रने/सहाय आपनार ए पाच बोसे जेससीये॥ आकाज्ञास्तिकाय जन्ययकी एक जन्य, केन्नय ( ए ) की क्षेत्रकालोक प्रमाण, काल यकी ख्रनादि खनंत, जानथकी खरूपी खने गुणयकी ख्रवकाश खांपनार ए पाच बोले डीललीये॥

॥ कालड्व डव्यकी एक ड्व्य, केन्नथकी श्रदीद्वीपप्रमाण,कालयकी श्रनादि श्रनंत,नावयकी श्ररूपी,गुणयकी वर्तना लक्षण ए पाच वोले वेललीये ॥ पुनलास्तिकायड्व्य डव्यकी श्रनंता ड्व्युई

त्रयको चीदराजलोक प्रमाण,कालयको ग्रनादि यनत, जानयको रूपी यने ग्रव्यको पूरण गलन, सक्ल पर्कण, विश्वंसण लक्कण, ए पाच वोले जेलखीये ॥ ॥जीवास्तिकायद्यक्य द्रव्ययको यनंताद्वव्यक्ते त्रयकी चौदराजलोक प्रमाण कालयकी य्यनादिश्यनंत, जानयको यरूपी यने गुण्यको चेतन गुण लक्षण, ए पाच वोले जेलखीये एव सर्व मली त्रीश बोल यथा ॥ ११ एकवीशमे वोले एक जीवराशि स्रमे वीजी

पानयकी श्ररूपी श्रने गुण्यकी चेतन गुण लक्षण, ए पान बोले संलखीये एवं सर्व मली त्रीश बोल श्रया ॥ ११ एकवीशमें बोले एक जीवराशि श्रने बीजी श्रजीयराशि ए वे राशि जाणवी ॥ १९वाबीशमें बोले श्रापकना बारवत कहेंने तिहां पहेंले बते त्रसजीवने हुणे नहीं श्रने स्थावर जीवनी मर्थादा करे, बीजे बते पाच मोटका जुन बोले नहीं, त्रीजे बते मोटकी चोरी करे नहीं, चोथे बते परस्री वते परिमह्नी मर्याटा करे, ठिठे वते दिशिनी मर्यादा करे, सातमे वते पवर कम्मीदाननी मर्यादा करे, आठ मे व्रते अनर्थ देमनी मर्यादा करे, नवमे वर्ते सामायिक करे, दशमे व्रते देशावकाशिक करे, अगीआरमे वर्ते पो सड उपवास करे, वारमे वने साधु मुनिराजने सुजतो

शुद्ध श्राहार पाणी श्रापे, एव वार व्रत जाणवा ॥ १३ त्रेवीशभे वोखे साधुना पाच महावन कहेंचे-

(१५°) नो लाग करे व्यने पोतानीस्त्रीनी मर्यादा करे, पांचमें

साधुजी, मने वचने कायाये करी कोइ जीवने सर्वथा
प्रकारे पोते इचे नहीं, हवावे नहीं श्रमे इएताने रुद्धुं
जाणे नहीं ते प्रथम प्रावातिपात विरमवन जावां हुं
ए साधु महाराज, मने वचने कायाये करी सर्व
या प्रकारे पोते जुटुं बोले नहीं, बीनाने जुटुं बोलावे
नहीं श्रमे जुटुं बोलाने रुद्धुं जांचे नहीं ते बीजु मृ
पावाद विरमण बत जावादु ॥
॥ साधुजी मने वचने कायाये करी सर्वया प्रका
रे पोते चोरी करे नहीं, बीजा पासे करावे नहीं श्रमे

करता प्रत्ये अनुमोदे नहीं ते त्रीजु अदत्तादान विर

मणवत जाणव ॥

**( ११** )<sup>,</sup>

॥ साधुजी, मने वचने कायाये करी सर्वथा प्रकारे मेंथुन पोते करे नहीं, बीजा पासे कराने नहीं. अने करताने रुकुं,जाये नहीं ते चोथुं ब्रह्मचर्यवत॥ ॥ साधुजी, मने वचने कायाये करी सर्वथा पोते

परिमह राखे नहीं, बीजाने रखावे नहीं, अने राखताने रूफु जाणे नहीं ते पाँचमु परिमह विरमण वत ॥ ॥ इवे ए पांच महावतना ज्ञांगा कहे वे ॥ ॥ पटेका प्राणानियान विरमण वतना जांगा

।। पहेखा प्राचातिपात विरमण वतना जांगा एक्पाशी थाय ते कहे हे ए पृथ्वीकायने हणे नहीं, हणावे नहीं खने हणताने कुं जाणे नहीं तेना मन, वचन खने काया ए

त्रण योगे करो नव जागा थाय.

ए अपकायने हणे नहीं हणावे नहीं अने हणताने

रुक्तं जाणे नहीं मन, वचन, कायाये करी

ए तेत्रकायने हणे नहीं, हणावे नहीं अने हणताने

रुष्ठुं जाणे नहीं मने, बचन श्रने कायाये करी: ए वायुकायने हुणे नहीं, हुणावे नहीं श्रने हुणताने रुष्ठु जाणें नहीं मन, वचन श्रने कायाये करी

ए वनस्पतिकायने हुणे नहीं, हुणीवें नहीं, हुणताने रुकुं जाणे नहीं मन, वचन खने कायाये करी.

(,१६) ए वे इडियने हुणे नहीं, हुणावे नहीं अने हुणताने

रुद्ध जाणे नही मन, वचन श्रने कायाये करी 🕻 ए त्रेंडियने हुए नहीं, हुएवि नहीं छने हुएताने रु जाणे नही मन, वचन अने कायाये करी ए चौरिडियने हुए नहीं, हुणावे नहीं खने हुलताने

ए पंचेंडियने हुणे नहीं, हणावे नहीं अने हणताने रुकुं जाणे नही मन, वचन अने कायाये करी

रुद्धं जाले नही मन, वचन खने कायाये करी

बीजा मुपवाद विरमण वतना जागा नत्रीश थाय ते कहे ने ए कोधना आवेशयी असल बोखे नई।, घोलावे न

ही, बोलनाने रूम जाणे नहीं मन, वचन कायाथी ए हास्ययो जुठु वोले नहो, बोलारे नही खने वोल

ताने रुद्ध जाए। नहीं, वचन अने कायाये करी

ए जययो जुठु बोले नही, बोलावे नही, बोलताने रुद्ध जाणे नही मन, वचन श्रने कायाये करी

ए खोजबी जुदु बोले नही, बोलाबे नही, बोलताने रुंड जाण नहीं मन, वचन खने कायाये करी

·( १३ )·

त्रीजा अदत्तादान विरमणवतनाः न्नांगा 🗟 चोपन थाय ते कहेंने..

ए श्रद्ध चोरी करे नहीं, करावे नहीं श्रने करताने रुम जाणे नहीं मन, वचन खने कायाये करी ए घणी चौरी करे नहीं, करावे नहीं अने करताने

रक्त जाणे नही मन, वचन श्रने कायाये करी ए न्हानी चोशी करे नहीं, करावे नहीं अने करताने रुम जाणे नहीं मन, वचन अने कायाये करो

ए महोटी चोरी करे नहीं, करावे नहीं, खने करताने रुनं जाणे नहीं मन, वचन अने कायाये करी

ए सचित्त वस्तुनी चोरी करे नही, करावे नही कर ताने रुनं जाणे नहीं मन. वचन, कायाये करी.

ए छचित्र वस्तुनी चौरी करे नही, करावे नही, कर ताने रुकुं जाणे नहीं मन, वचन, कायाये करी.

चोया मैथन विरमणत्रतना ज्ञागा सत्तावीश थाय ते कहे हे. ए देवतानी स्त्रीने जोगवे नहीं, जोगवावे नहीं, जोग

वताने रुम जाणे नहीं मन, वचन, कायाये करी. ए मनुष्यनी स्त्रीने जोगवेनही, जोगवावेनही स्रते जोगवतानेहरुं जाधेनहीमन, वचनश्रनेकायायी

( 88°) ए तिर्यंचनी स्त्रीने जोगवेनही, जोगवावे नही अने जोग बताने रुष्ट जाले नही मन, बचन, कायाची ॥ पाचमा परिग्रह विरमण्डनना जागा चो पन थाय ते कहे वे ए श्रहप परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं, श्रने राखता ने रुक्त जाए। नहीं मन, वचन, अने कायाये करी. ए घणो परियह राखे नहीं, रखावेनही अने राखताने रुष्ठु जाणे नही मन, वचन धने कायाये करी. ए न्हानो परिग्रह राखे नही, रखावे नही, अने राख ताने रुद्धं जाणे नही मन, वचन, खने कायाथी. ए महोटो परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं, श्रने राख ताने हुं जाणे नहीं मन, वचन, अने कायाथी ए सचित्र वस्तुनो परित्रह राखे नही, रखावे नही अने राखताने रुष् जाणेन्हीमन,वचन,श्रने कायाथी. ए श्रचित्त वस्तुनो परिघह राखे नहीं, रखावे नहीं श्र ने राखताने रुमं जाणे नहीं मन, वचन, कायाथी. ॥ एम ए पाचे महावतना मेली १५२ जागा भया। १४ चोवीशमे वोले अतना जागार्जगणपचाश कड़ेते. तिहा प्रथम एक करणने एक योगधी नव जागा था

( {4 ( ) य ते कहे हे १ मने करी करं नहीं. श्वचने करी क रुं नही, हे कायाये करी कहं नही, ध अने करी करा वं नही, ए वचने करी करावं नही, ६ कायाये करी करावुं नही, 9 मने करी श्रनुमोइं नही, ध वचने कर रो अनुमोज्ज नही, ए कायाये करी अनुमोज्जं नही ॥ हवे एक करणने वे योगयी नव जांगा याय ते कहे हे १ मने करी वचने करी करुं नही, १ म-ने करी कायाये करी करुं नही, ३ वचने करी कायाये करी कर नही, ४ मने करी वचने करी कराब नही, ५ मने करी कायाये करी करावुं नहीं. ६ वचने करी का-याये करी करावुं नहीं. 3 मने करी वचने करी आनु-

हवे एक करणने त्रण योगथी त्रण जांगा थाय ते कहे हे १ मेने वचने अने कायाये करी कर्र नही, १ मने वचने अने कायाये करी करावु नही, ३ मेने, वचने अने कायाये करी अनुमोढुं नही ॥ ॥हवे वे करण अने एक योगथी नव जांगा थाय ते कहे हे १ मनेकरी कर्र नही, करावुं नही, १ वचने करी कर्र नही करावुं नही, ३ कायाये क्री कर्र नही

मोर्छ नही, o मने केरी कायाये करी श्रनुमोर्छ नहीं, ए वचने करी कायाये करी श्रनुमोर्ड नहीं.॥ करातुं नही, धमने करी कर नहीं, अनुमोदुं नहीं ए य-चने करी कर नहीं अनुमोदु नहीं, ६ कायाये करी करुं नहीं अनुमोदु नहीं, 9 मने करी करातु नहीं अ-नुमोदु नहीं, 0 बचने करी करातु नहीं अनुमोदु न-हीं, ए कायाये करी करातु नहीं अनुमोदु नहीं ॥

॥हवे वे करण श्राने वे योगथी नवज्ञांगा याय ते कहे ठे २ करुं नहीं कराबु नहीं मने करी वचने कर २ करु नहीं कराबुं नहीं मने करी कायाये करी ३ कर

( १६ )

नहीं करांचु नहीं वचने करी कायाये करी थे कर नहीं अनुमोंचुं नहीं मने करी वचने करी, थे कर नहीं अनुमोंचु नहीं मने करी कायाये करी ६ कर्फ नहीं अनुमोंचु नहीं वचने करी कायाये करी ए क रांचुं नहीं अनुमोंचुं नहीं मने करी वयने करी ए क रांचु नहीं अनुमोंचुं नहीं मने करी कायाये करी ए करांचु नहीं अनुमोंचुं नहीं वचने करी कायाये करी।

॥हवे वे करण व्यते त्रण योगधी जागा त्रण वाय ते कहे वे १ कर नही कराउं नही मते करी वचने कर री कायाये करी, १ कर नही व्यनुमोज नही मने करी वचने करी कायाये करी, ३ कराउं नही व्यनु-मोजं नहीं मने करी वचने करी कायाये करी॥ ( 53 )

॥ इवे त्रण करण अने एक योगयी त्रण जांगा याय ते कहे हे १ करुं नहीं कराबुं नहीं अनुमोछ नहीं मने करी, १ करुं नहीं कराबुं नहीं अनुमोढ़ नहीं वचने करी, ३ करु नहीं कराबुं नहीं अनुमोड़ नहीं कायाये करी ॥

याय ते कहे ठे १ कर नहीं कराब नहीं अनुमेछिं नहीं मनेकरी, वचनेकरी, १ करुं नहीं कराबुं नहीं अनुमोछ नहीं मने करी कायाये करी, ३ करुं नहीं कराबुं नहीं अनुमोछं नहीं वचने करी, कायाये करी।।

हवे त्रण करण अने वे योगथी त्रण जागा

॥ हवे त्रण करण श्रमे त्रण योगथी एक नागो याय ते कहे ठे १ मने करी वचने करी कायाये करी कर्र नहीं करांबुं नहीं श्रमुमोंडुं नहीं ॥ ॥ सरवाले एक करणने एक योगयी नव, एक

करणने वे योगथी नव एक करणने त्रण योगथी त्रण तथा वे करणने एक योगथी नव, वे करणने वे योग-थी नव. वे करणने त्रण योगथी त्रण तथा त्रण क-रणने एक योगथी त्रण, त्रण करणने वे योगथी त्रण अने त्रण करणने त्रणयोगथी एक एवं धण्तांगा यथा॥ ३५ पद्मीसमे बोले पाच चारित्रनां नाम कहें हैं । सामायिक चारित्र, बीजो हेदोपस्थापनीय चारित्र त्रीजो परिहारविशक्ति चारित्र, चोषो सुदम संपराय चारित्र खने पाचमो यथाख्यात चारित्र एव पाच ॥ २६ ठवीशमे बोले नैगमनय, संघहनय, व्यवहार नय, रूजुसूत्रनय, शब्दनय, समन्निरूढनय खने एव जूतनय ए सात नय जाणवा २७ सत्तावीशमे बोखे नामनिकेप, स्थापनानि क्षेप, इत्यनिक्षेप अने जावनिक्षेप ए चार निकेपी जाणवा श्रवावीशमे वोले जपसमसमिकत, कायोपश-मसम्कित, क्वायिकसम्भित, शास्त्रादनसम्भित अने वेदक समकित ए पाच समकित जाणवा, ॥ १ए र्जगणत्रीसमे बोखे श्रृगाररस, वीररस, करु षा रस, हास्यरस, रौडरस, प्रयानकरस खद्जूतरस

विजत्तरस्त स्रोते शातरस्त ए नवरस्त जाणवा ॥
३० त्रीसमे वोले १ वमनीर्भाष, २ पीपलनीर्भाषु
३ वैवरना फल, ४ पीपरीनीर्भाषु, ५ कटुवरना फल
६ मधु, ९ मालण, ए मास, ए मिरा, १० हिम
१९ विप ते अफिण, सोमल प्रमुख, १२ करहा ते रो
यमा १३ सर्व जातनी काची माटी, १४ रात्रिजोजन

रें बहुवीज फल, १६ ध्वनंतमाय कंदम्ब फज, रेंड वोमानु खयाणु, रेंड काचा गोरसमा करेला वमा, रेंण वेंगण रींगणा, २० जेनु नाम न जाणता होइयें पवा खजाएयां फल फूल,२१ नुइफल ते चणी बोर तथा कुथली वस्तु खखेत काचां फल, तथा पी लमा पीच प्रमुख घर चलित रस ते सफेलं खजा

वार तथा कुअला वस्तु अलतकाचा फल, तथा पा द्रमा पीचू प्रमुख ११ चिति रस ते सफेट्टं छन्ना दिक जेनु काल पूरो थयाथी स्वाद वदृहयुं होय, रस चिति यह गयुं होय ते एवावीश छन्नस्य वर्ज्जवा तेना नाम जाणवा ॥

३१ एकत्रीशमे वोले एक ऊष्पातुषोग, वी जो गणि तानुषोग, त्रीजो चरणकरणातुषोग व्यने चोषो धर्म कथानुषोग ए चार व्यनुषोग जाणवा ॥ ३१ पत्रीशमे वोले एक देवतस्व, बीजो ग्रहतस्व

अने त्रीजो धमेतत्व ए त्रण तत्त्व जाणवां ॥ ३३ तेत्रीशमे बोले काल, स्वजाव, नियत, पूर्वकृतते कमे अने पुरुषकार ते ज्यम ए पाच समवाय जाणवाः

३४ चोत्रीशमे वोले एक कियावादीना एकसी एंशी नेद,वीजा श्रक्तियावादीना चोराशी नेद,वीजा विनयवादीना वत्रीश नेद श्रने चोषा श्रक्तान वादी ना समसठ नेद एरीबे चार प्रकारना पासंमीठ के े (२०) तेना सर्व मली त्रण्डों ने त्रेसठ चेद श्रीसूयगक्ता सूत्रयो जाण्या ॥ ३५ पात्रासमें बोले श्रावकना एंकवीहा सुण कही

देखां में हे १ कुड़मिन वालों न होय पण गर्नीर होय, १ पार्चेडि स्वष्ट होय रूपवत होय एटले अ गोपाग सपूरण होय, ३ सीम्यप्रकृति वालो होय, स्वन्नावे श्रपण कार्ये होय. ४ सर्वदा सदाचारी होय

होय, ए सिक्कष्ट परिणामधी रहित होय, क्रूर चित्त वालो न होय, ६ इह लोक परलोकना अपायधी एटले कष्टथी वीहितो रहे तथा अपयशधी वीहितो रहे, ९ अशठ होय परने छमे नहीं, ए दातिएयता वालो होय परनी प्रार्थना प्रंग करे नहीं, ए स्वकुला दिकने। लक्षावत होय अकार्य वह्मक होय, १० दया

माटे सर्व खोकने बह्नज होय, प्रशंसा करवा योग्य

दिकने। बज्जावत होय अकार्य वर्ज्जक होय, १० दया वंत होय, ११ सोम्यटिष्ट वालो होय, ११ ग्रुणी जी बोनो परुपाति होय, १३ ज्ञिल धर्म कथानो उपदेश करनार होय, १४ सुशीलादि एवा अनुकूल परिवार युक्त होय, १४ ठमा विचार वालो दीर्घदार्श होय,१६ मक्तपात रहित पणे ग्रुण दोप विशेषनो जाण होय, १९ व्य पुरुषो जे परिणत मितवाला तेने सेवनारो (२१) तेनी अनुजाइचें चांजनारो होय, १७ ग्रुणाधिक पुरु पनो विनय करनारो होय, १७ क्खा ग्रुणनो जाण नोम १० निर्वेती सको सोबानो सेने प्रशेष हार की

नेपा तनय करनारा हाय, रेड परशा अवान आव होय, २० निर्लोजी थको पोतानो मेले परोपकार करे, ११ लब्धलक ते धर्मानुष्ठान व्यवहारने। लक्ष जेने प्राप्त थयो होय, ए एकवीश ग्रुण जेमा होय ते आणी धर्मरूपरत्नपामवानी योग्यतावत कहेवाय ए एकवीश ग्रुण श्रावकना जाणवा॥ इति पात्रीश बोल साप्त॥

श अथ शाखामणना वाल ॥
१ कोइपण शुक्तकार्य करता विक्षंत्र न करवा १ मतलव विना लवारों न करवा,
३ ज्ञानी यहने गर्व करवा नही
४ वनता सुधी कमा श्रवश्य धारण करवा
५ घरनुं गुद्ध कोइने कहेवुं नही,
६ स्त्री तथा पुत्रनी कुवात कोइने कहेवा नही.
७ मित्रयी काइपण श्रतर राखवा नहीं,
० कुमित्रना विश्वास न करवा

ए प्रेम राखनारी स्त्रीनो पण विश्वास न करवोः २० कोइपण कार्य करबु ने विचारोने करबुं ११ मात, पिता,ग्रस्तया महोटापुरुपनो विनय करवो ११ स्त्रीने ग्रह्मनी वात कहेवी नहा ( १२ ) १३ पेट झरायाथी जोजननो संतोप न करवो, १४ विद्या जणवामां संतोप न करवो १५ पान देतां खकखाबु नहीं।

१६ तव्हया करवामा पाठुं हठवुं नही १९ यहण करेखी प्रतिक्का जंग करवी नहीं, १० श्रन्यायथी डव्य उपार्जन करवुं नहीं। १७ सारीस्तु बल विचाखा विना युद्ध करवुं नहीं। १० माठा कार्यथी निवर्षतु

१७ माठा कार्यथी निवर्त्तेतु
११ फु खना समये धेर्य तजतु नही
११ वगलानी पेरे इिज्यो गोपनी राखनी
१३ कुककानी पेठे प्रजाते सहुषी वहेत्रु उग्तु
२४ खंगथी प्रमाद दूर करनो

२४ खंगथे। प्रमाद दूर करवो १५ निद्रा चेतता करवी १६ चिं∗वेद्य कार्य पार पड्याविना कोइने कदेदुं नर्ह १७ सासरे च⊡राइ धारण करवो श्रने मुरखाइ तजव १० ग्रण खेवामा प्रयत्न करवो

१७ नीच नरथी पण जत्तम विद्या लेवी ३० सरखा साथे भीति करवी २४ क्लेशने स्थानके मौनपणुं धारण करवुं ३१ महोटा साथे वेर करवुं नही ( १३ ) । १३ क्षेत्रक्षेत्रमां, जोजनमां, नियाजणवामां, ठ्या पारमा श्रमे वेद्य श्रागल लाज करवी नहीं । १४ क्षेत्रस्थानके उन्तुं रहेतुं नहीं । ३५ श्रक्ति, ग्रह, ब्राह्मण, गाय, कुमारी श्रमे शास्त्रमा

पुस्तक पटलाने पग लगानवा नही.

३६ घो, तेल, दहीं, दूध, प्रमुख ज्ञाना मृकवा नही

३७ वैच, अनिहोत्री, राजा, नदी, ज्यापारी वाणीयो

ए पाच ज्या न होय त्या वसतुं नही.

३० नीचची विवाद करवो नही

३७ जे यकी जीवने जोखम याय ते बनपण वर्जनुः

४० शत्रुनी ज्यर पग निर्देय यनुं नही

४९ मूर्ल, कायर, अनिमानी, अन्यायी, अने सुष्ट ए

धर मूर्खने हितोपदेश देवो नेही, धर् परस्त्रीने सर्पेदा वर्जनी धर इंडियो सर्वया वश राखनी धर मूर्ख मित्र करवा नही

रेलाने स्यामी करवा नही

४४ इडिया सबया वश राखवा

४४ मूर्ख मित्र करवो नही

४६ सोजीने डल्यथी वश करवो.

४९ ठती शक्तिये परनी आशा जग करवी नही.
४७ उत्ती शक्तिये परनी आशा जग करवी नही.

धए राजा रीके तो पण विश्वास करवी नहीं। थ० एक अकर शिखवनारने पण ग्रह करी मानवी. पर पाणी गलीने तथा जोइने पीव थर प्राणाते पण सत्य चोलव वर्जव नही **५३ पोताना अवगुण शोधी काहामवा** ५४ राजानी स्त्री, गुरुनी स्त्री, मित्रनी स्त्री, सासु श्रने पोतानी माता ए पाच माता जाणवी

( २४ )

एए कार्य तथा सरकार विना कोइने घेर जाव नही प्द वचनन् दारिङ राखवुंज नही यंत्र सेखण,पुस्तक छाने छा। ए त्रण कोइने छापवा नही **ए**ट घावक जोइने खरच करवे

थए इरएक विद्या मुखपाने राखनी ६० स्वामी प्रसन्न यये गर्वित यव नही ६१ करियाणु जीया वगर हाथी मेखवरी नही.

६२ शम्त्र वांधनार तया ब्राह्मण प्रमुखने घीरबुं नही

६३ नट, विटक्षेल वेश्या, जुगारीने जधार श्रापनु नही

६४ ग्रप्त धन देव तो होशीयारीथीपका बदोबस्तथीदेव

६५ वे चार साही रारया विना धन आपवुं नही.

६६ जधार खावेलुं धन मुदत पहेलाज आपवु

६७ घरमा पैसा ठता देव करवु नही

( १५) ६६ देवुं होय तो ते व्यापवाना ज्यममां रहेवुं. ६७ प्रीतिवत साथे प्राये क्षेत्रक देवक करवी नही. <sup>90</sup> चोरेंद्वी वस्तु जो मफत मखे तो पण देवी नही <sup>98</sup> छराचारीने जागीदार करवे। नही **9२ खांघण करवी नही ७३ खात्रीदारने किसीदार करवा** 98 श्राप्युं लीधुं होय ते लखवामा श्रालश न करवो ७५ नवनवा ग्रमास्ता महेतां (वाषोतर) करवा नही. ७६ न्यातमा नम्रता राखवी. ९९ स्त्रीने मिष्ट वचनथी घोषाववी. So शत्रुने पेटमां पेशी वश करवो u सित्र पासे पण शाकी त्रिना यापण मुकवी नही Go एकाद वे महोटानी चेललाण श्रवस्य करवी ७१ वनता सुधी कोइनी साकी जरवी नही. ण्य परदेशमां केकी वस्तु सेवन करवी नही। ण्य जन्तव मूकी, ग्रुह खने पिताना खपमान करी त्रोकराने रोवरावी, हत्या करी, तैयार थयेह ज्ञोजन निज्ञवी, रुदन साजली, मेथुन सेवी वामीट करी, समीप आवेलो पर्व अवगणी ह ( १६ )
धनो जोजन करी एटखा वाना करी आत्मिहतेच्छुये परदेश जबुं नही

छ जे घरमा कोइ माणस न होय ते घरमा न जबुं
हुए कारण विना पिताना डुट्यनी आशा न करवी

हु परदेशमा आर्कवर धारण करवो

09 कोइनी बात कोइने कहेवी नहीं oo माता पितानी श्राज्ञा खोपवी नहीं. **एए माता पितानी सेवा चाकरी मन राखी करवी**. ए॰ ग्रुरु खने माता पिताना दररोज पगे दाववा एर माता पिता आगल जुटुं बोलवु नही ए२ माता पिताना धर्मादिना मनोर्य पूरेण करवा ए३ महोटा नाइने पिता सरिखो जाणवे। ९४ ज्ञाइनी छुर्दशा दूर करवी, कुमार्गथी निवारवं ए५ रोगमा, दुष्काखमा, शत्रुना जयमा, अने राज्य द्वारमा एटखे स्थानके जाइनी सहायता करवी ए६ कोइपण उत्तम कार्यमा जाइने जुलवो नही 🤫 नाटककौतुक घणा जनोमा स्त्रीने जोवा देवा नही ए० स्त्रीपासे सारी रीते सेवा कराववी

ए९ स्त्रीने रात्रे वाहेर जवा देवी नहीं १०० स्त्री रीसाइ होय तो तरतमनात्री क्षेत्री

( 53 ) रेण स्त्रीने घरना काममां इत्य खापी वर्ताववी १०२ जत्तवना दिवसे सगांसंवधी जुखी जवां नहीं। १०३ दुःखपामता एवा सगासंबंधीने सदाय करवें १०४ सगा साथे कदावि विरोध करवी नही १०५ जे घरमां एकली स्त्री होय ते घरमां जवुं नही. १०६ धर्मना काममा सगाउने जोमवाः ९०७ वगासुं साता, ठीकना उनकारखातां अने इसतां एटले ठेकाणे मुख दावबु नही<sup>ड</sup> १०७ डंधं तथा चितु सुंबं नहीं. १०ए जमता ठींक आवेतो तरत पाणी पीवुं.

११० उन्ने उन्ने दीसाय करवो नही. १११ वने वज्ने पाणी पीवु नही ११२ सुती वखते ठाती पर हाथ राखवो नही ११३ कन्यासाराकुलमायापत्री, दुलीकुलमान्यापत्री. ११४ कन्यानुं इच्य सेवुं नही ११॥ कन्यानी वरकन्याना वयथी वधारे वयनी करवी

११६ रोगी, वुड, मूर्ख, दारिड़ी, वैरागी, कोधी अने **=**हानी वयनो एटलाने कन्या श्रापकी नही.

११९ महोटो पुरुप घेर छावे तो छन्ना यह सन्मान देव

११७ दोस्तदारी मित्राचारी, पिनतो साथ राखवी

( १७ ) ११७ नवानवा शास्त्रवांचवानो छात्रपासजायु करवोः १२० कोइपण मय जणता छाधुरा मूकवो नहीः

१२२ पोताना मुखयी पोतानी प्रशंसा करवी नही. १११ पोताना मुखयी पोतानी प्रशंसा करवी नही. ११२ वता पराकमे निरुद्यमी थबु नही

१२३ कपटीना छामवरनो विद्यास न करवो १२४ गइ वस्तुनो होक न करवो १२५ शत्रु होय तेना पूर्ण समये समझानेजानुः

रश्द शूर्वीर यहने निवेखने हु स देवु नहीं रश्च श्वति कछे पण आत्मघात करवो नहीं। १२० झास्य करता कोइनु मर्भ प्रकाशवु नहीं

४२० हास्य करता काइनु मम प्रकाशबु नह १०० हास्य करता कोइ उपर कोघ र १३० वे जण विचार करता होय त्या न १३१ पंच नाकारो करे ते काम करबु

१२१ मध्य माजारा कर ते काम करेंचु १३१ माठु काम करी हुर्व पामबु नहीं १३१ नपेक्षु कास्त्र निरंग प्रत्ये स्क्र १३४ पर्पेक्षु वास्त्र निरंग प्रत्ये स्क्र १३४ पुरुषे राजिये हुर्वेण जोज नहीं

रश्य चण्छु शास्त्र ।नरय प्रत्य सम् १३५ पुरुषे रात्रिये दर्पण जोशु नर्द् १३६ सुन, भेथुन निद्धा, द्वार १३७ रोटलो थापबो पण उटलो १३० सर्वनी साथे उल्लाला ( १ए ) १३ए नोजन करवाने एक प्रहर पुरण न थयो होय

एटलामां फरी जोजन करव नही तेमज जोज

न कस्ता पठी वे प्रहर याय के फरी जमी लेख परंतु वे प्रहरयी उपरांत जूख्य रहेंबुं नहीं। १४० स्त्रीना वखाय तेना मरण पठी करवा १४१ राजा,देव,श्रमे गुरुनी पासे खाली हाथे जबुं नहीं १४१ निर्वज स्त्री साथे हास्य न करवुं १४३ शुज कार्यमां कालविलंग न करवो

१४५ ब्रर्फ रात्रे जंबस्वरे गुद्धनी वाता कहेवी नही. १४६ जोजननी वचे खने ब्रंतमां जल पीतुं १४९ ब्रजीरण थाय तो एक वे टंक जोजन वर्जवुं. १४० हरपना समयमां शोकनी वात तजवी. १४७ कोइ कोधना ब्रावेशयी निष्ट्रस्वचन खापणने

१४४ तमकेथी आवी तरत पाणी पीव नही

श्रावी कहे तो पण न्याय मार्ग मुकवो नही. १५० माता, पिता, ग्रह, शेठ, स्वामी, श्रने राजा पटलाना श्रवगुण वोलवा नही. १५१ मूर्ल, दुष्ट, श्रनाचारी, मलीन, धर्मनी निंदा करनारों, कुशीलीयों, लोजी श्रने चोर प्रटला

नो संग क्यारे पण करवो नही.

१५१ श्रजाएया माणसनी कीर्ति करवी नहीं। १५३ खजाएया माणसने पोनाना घरमां राखब नही १५४ श्रजाएया कुल साथे सगाइ करवी नहीं. १५५ छजाएया माणसने चाकर राखवी नही १५६ पोताथी महोटा माणस उपर कोप न करवो

१५३ महोटा माणस साथे क्खेश करवो नही १५० ग्रुणवान माणुस साथे वाद न करवोः १५७ दारिज ब्रावे आगली कमाइनीइडा राखे ते मूर्ख १६० पोताना गुणना वखाण करे, ते मुर्ख

१६१ माथे देवु करीने धर्म करे, ते मूर्ख रद्दर उधारे धन श्रापीने मागे नहीं, ते मूर्ख १६३ सज्जन साथे विरोध करे अने पारका स्रोक साथे प्रीति करे ते मूर्प जाएवो.

१६४ न्याय मार्गे धन छपार्जन करवं १६५ देश विरुद्ध कार्य न करन् १६६ राजाना वेरीनी संगत न करवी

१६९ घणा माणस साथे विरोध न करवी

१६० जला पनोसीनी पासे रहेतुं

१६ए पोतानो धर्म मुकवो नहीं.

१७० पोताने आशरे रह्यो होय तेतुं हित करवुं-

(३१)
रशर खोटा लेख लखना नहीं।
रशर खोटा लेख लखना नहीं।
रशर देन ग्रुकेन निषे जिक्त राखनी।
रशर दीन व्यने व्यतिथिनी वनती सेना करवी।
रश्य ने जाग्यमां हुशे ते मलशे एनो जरोसो राखीने
ज्यम मुकी व्यापनो नही

ज्यम मूकी श्रापवो नही रिष्प चोरीनी वस्तु लेवी नही रिष्ठ सारी नरसी वस्तु जेली करी वेचवी नही रिष्ठ श्रापदानुं वर्जन करवा राजानो श्राश्रय लेवो.

१९७ तपस्वीने, कविने, वैद्यने, मर्मना जाणने,रसोइ

करनारने, मंत्रवादीने छने पोताना पूजनीकने पटलाने कोपाववा नहीं. १७ए नीचनी सेवा छाचरवी नहीं १०० विद्यासघात करवो नहीं. १०१ सर्व वस्तुनो नाश थतो होय तोपण पोतानी वाचा छवश्य पालवीं. १०२ धर्मशास्त्रना जाण पासे वेसन्तः

१०४ मार्गे चालतां तंत्रोल न खावां. १०५ विषारी दांते करी जांगवी

१७३ कोइनी निंदा करवी नही.



